७. नेताजी का चश्मा

कविता का सारांश

कहानी का मुख्य पात्र हालदार साहब है, जिन्हें हर पंद्रहवें दिन अपने काम के सिलसिले में एक छोटे कस्बे से गुजरना पड़ता है। उस कस्बे में एक ही मुख्य बाज़ार, कुछ मकान, लड़कों और लड़कियों के स्कूल, एक छोटा सीमेंट कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका थी।

कस्बे की नगरपालिका ने मुख्य बाज़ार में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की संगमरमर की मूर्ति लगवाई। मूर्ति को स्थानीय हाई स्कूल के ड्राइंग मास्टर मोतीलाल जी ने बनाया था। मूर्ति सुंदर थी, लेकिन नेताजी की आँखों पर असली चश्मा नहीं था, बल्कि संगमरमर का चश्मा नहीं बन पाया था।

हालदार साहब जब मूर्ति को देखते हैं, तो पाते हैं कि नेताजी का चश्मा बार-बार बदलता रहता है। इस रहस्य का पता पानवाले से चलता है। पानवाले बताते हैं कि कस्बे में एक चश्मेवाला, जिसे लोग 'कैप्टन' कहते हैं, मूर्ति पर चश्मा बदलता रहता है। जब कोई ग्राहक अपने लिए चश्मा चाहता है, तो कैप्टन मूर्ति से फ्रेम निकालकर ग्राहक को दे देता है और बाद में मूर्ति पर नया चश्मा लगा देता है।

हालदार साहब को यह तरीका बहुत अनोखा और सराहनीय लगता है। दो साल तक वह पंद्रह दिन के अंतराल पर मूर्ति में बदलते चश्मों को देखते रहते हैं।

एक दिन कैप्टन की मृत्यु हो जाती है। उस दिन मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं होता। लेकिन लोगों की श्रद्धा और स्मृति को दर्शाने के लिए किसी ने मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा। हालदार साहब इस दृश्य से बहुत भावुक हो जाते हैं।

कहानी का संदेश: यह कहानी देशभक्ति, श्रद्धा और आम लोगों की निष्ठा को उजागर करती है। यह दिखाती है कि महत्त्व किसी मूर्ति के आकार या रंग-रूप में नहीं, बल्कि उस भावना में है जो उसे बनाने और सजाने वाले लोगों में होती है।

शब्दार्थ

- **प्रतिष्ठापित** – स्थापित किया गया
- **प्रतिमा** – मूर्ति
- **संगमरमर** – मार्बल, पत्थर
- **शासनाविधि** – शासन की अवधि
- **भूतपूर्व** – पहले का
- **हृदयस्थली** – विशेष महत्व रखने वाला स्थान
- **हालदार साहब** – पुलिस अधिकारी, सेनानी, अफसर

www.onepointlearning.com

- **कस्बा** – छोटा शहर
- **कौम** – जाति
- **लागत** – खर्च
- **सराहनीय** – प्रशंसा के योग्य
- **खुशमिज़ाज** – खुश रहने वाला, प्रसन्न स्वभाव वाला
- **लक्षित करना** – देखना
- **कौतुक** – आश्चर्य, उत्सुकता, जिज्ञासा
- **उहापोह** – क्या करें, क्या न करें की स्थिति (निर्णय न हो सकना)
- **आहत** – घायल, दुखी, क्षुब्ध
- **अवाक्** – चुप, मौन
- **प्रफुल्लता** – खुशी, प्रसन्नता
- **द्रवित** – भावुक, संवेदनशील
- **गिराक** – ग्राहक
- **कत्था** – पान में लगाया जाने वाला खैर की छाल का सत
- **संदूकची** – सामान रखने वाला, बक्सावाला
- **फेरी** – घूम-घूमकर विक्रेता, घुमंतू व्यापार
- **मरियाल** – दुर्बल, कमज़ोर
- **दरकार** – आवश्यकता
- **सरकंडा** – बांस, लकड़ी की टहनी
- **निष्कर्ष** – नतीजा
- **दुर्दमनीय** – असहनीय, दबाना मुश्किल
- **होम** – मूल्यवान वस्तु का त्याग करना
- **भ्रष्ट** – खराब, दोषपूर्ण
- **भावुक** – असरदार, संवेदनशील, भावनात्मक
- **निष्ठा** – ईमानदारी, लगन, समर्पण

www.onepointlearning.com

प्रश्न - अभ्यास

1. **सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?**

   उत्तर: चश्मेवाले का नाम "कैप्टन" इसलिए पड़ा क्योंकि वह नेताजी की मूर्ति पर चश्मा बदलने का जिम्मा निभाता था। यह उसका एक विशेष पेशा और पहचान बन गई थी। हालाँकि वह वास्तविक सेनानी या फौजी नहीं था, लेकिन उसकी कार्यशैली और देशभक्ति को देखकर लोग उसे कैप्टन कहकर सम्मान और पहचान देते थे।

2. **हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा-**

   (क) हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?

   उत्तर: हालदार साहब पहले मायूस इसलिए हुए क्योंकि पानवाले और कैप्टन दोनों अब इस दुनिया में नहीं थे—मास्टर ने मूर्ति के लिए पारदर्शी चश्मा नहीं बना पाया और कैप्टन मर गया था। मूर्ति पर कोई असली चश्मा नहीं था, इसलिए उनका रोज़मर्रा का कौतूहल और खुशी का अनुभव अधूरा लग रहा था।

   (ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

   उत्तर: सरकंडे का छोटा सा चश्मा यह दिखाता है कि जनता अपनी श्रद्धा और भावना से किसी न किसी तरह नेताजी की मूर्ति को जीवंत बनाए रखती है। यह उम्मीद जगाता है कि भले ही असली चश्मा न हो, लेकिन लोगों की श्रद्धा और देशभक्ति अभी भी जीवित है।

   (ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?

   उत्तर: हालदार साहब भावुक इसलिए हो उठे क्योंकि उन्होंने देखा कि इतने साधारण और छोटे प्रयास—सरकंडे का चश्मा लगाना—भी किसी की देशभक्ति और सम्मान को दर्शा सकते हैं। यह उन्हें आम जनता की भावना और निष्ठा पर गर्व और श्रद्धा का अनुभव कराता है।

3. **आशय स्पष्ट कीजिए-**

   "बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है!"

   उत्तर: इस वाक्य का आशय यह है कि लेखक सोचते हैं कि देशभक्ति और बलिदान देने वाले लोग कितने महान हैं, जो अपने घर-गृहस्थी, जवानी और जीवन की सुविधा छोड़कर देश के लिए काम करते हैं। दूसरी ओर, कुछ लोग ऐसे बलिदानी व्यक्तियों का मज़ाक उड़ाते हैं और अपने व्यक्तिगत लाभ के मौके तलाशते हैं। यह देशभक्ति और समाज की निष्ठा के बीच विरोधाभास को दिखाता है।

4. **पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।**

   उत्तर: पानवाला एक मोटा, खुशमिज़ाज आदमी था। उसके मुँह में पान भरा रहता और पीछे मुड़कर अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाता था। वह हास्यपूर्ण अंदाज में बात करता और स्थानीय लोगों के लिए मित्रवत था।

www.onepointlearning.com

5. **"वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल!"**

   कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

   उत्तर: पानवाले इस टिप्पणी के माध्यम से बताना चाहता था कि कैप्टन असली फौज का सैनिक नहीं था। वह इतना बूढ़ा और लंगड़ा था कि फौज में नहीं जा सकता था। इसके बावजूद उसने अपनी सीमित क्षमता और साधनों के बावजूद नेताजी की मूर्ति के लिए योगदान दिया। पानवाले की यह टिप्पणी मजाक के स्वर में थी, लेकिन यह कैप्टन की लगन और निष्ठा को कम नहीं करती।

रचना और अभिव्यक्ति

6. **निम्नलिखित वाक्य-पात्रों की कौन-सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं-**

   (क) हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते।

   उत्तर: यह वाक्य हालदार साहब की देशभक्ति और मूर्ति के प्रति सम्मान की विशेषता को दर्शाता है। वे नेताजी की प्रतिमा से इतना प्रभावित थे कि अपनी व्यस्तता के बावजूद भी उसे देखने के लिए रुक जाते थे।

   (ख) पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला- 'साहब! कैप्टन मर गया।'

   उत्तर: यह वाक्य पानवाले की संवेदनशीलता और कैप्टन के प्रति उसके मन में छिपी हुई गहरी भावना को प्रकट करता है। ऊपरी तौर पर वह कैप्टन का मज़ाक उड़ाता था, लेकिन उसके मरने पर वह सचमुच दुःखी था।

   (ग) कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगा देता था।

   उत्तर: यह वाक्य कैप्टन की देशभक्ति और देशभक्तों के प्रति उसके मन में सम्मान की विशेषता को दिखाता है। वह एक सच्चा देशभक्त था जिसे नेताजी की बिना चश्मे वाली मूर्ति देखकर कष्ट होता था।

7. **जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् नहीं देखा था तब उनके मानस-पटल पर उसका कौन-सा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए।**

   उत्तर: जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को नहीं देखा था, तब तक उनके मन में कैप्टन का चित्र एक मजबूत, हट्टा-कट्टा, फौजी जैसा या कम से कम एक ऐसा व्यक्ति रहा होगा जो फौजी वर्दी में रहता होगा। उन्होंने सोचा होगा कि वह कोई बहुत बड़ा और बलशाली आदमी होगा, जो नेताजी से प्रभावित होकर ऐसा देशभक्ति का काम करता होगा।

8. **कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर किसी न किसी क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने का प्रचलन सा हो गया है-**

   (क) इस तरह की मूर्ति लगाने के क्या उद्देश्य हो सकते हैं?

   उत्तर: इस तरह की मूर्ति लगाने के कई उद्देश्य हो सकते हैं:

   - सम्मान प्रकट करना: समाज के लिए महत्वपूर्ण योगदान देने वाले व्यक्तियों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करना।

- प्रेरणा देना: उनकी उपलब्धियों और आदर्शों से लोगों को प्रेरणा देना, खासकर युवा पीढ़ी को।
- पहचान बनाना: उस क्षेत्र या शहर की पहचान को उस प्रसिद्ध व्यक्ति से जोड़ना।
- इतिहास को याद दिलाना: आने वाली पीढ़ियों को इतिहास के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के बारे में बताना और उन्हें जागरूक करना।

(ख) आप अपने इलाके में किसी व्यक्ति की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर: (यह एक व्यक्तिगत उत्तर है, आप अपनी पसंद के अनुसार जवाब दे सकते हैं। यहाँ एक उदाहरण दिया गया है।)

मैं अपने इलाके में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की मूर्ति स्थापित करवाना चाहूँगा। इसका कारण यह है कि वे एक महान वैज्ञानिक, राष्ट्रपति और सबसे बढ़कर एक अद्भुत शिक्षक थे। उनका जीवन सादगी, ईमानदारी और कठोर परिश्रम का प्रतीक है। उनकी मूर्ति युवाओं को विज्ञान, शिक्षा और देश सेवा के लिए प्रेरित करेगी।

(ग) उस मूर्ति के प्रति आपके एवं दूसरे लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए?

उत्तर: मूर्ति के प्रति हमारे और दूसरों के उत्तरदायित्व निम्नलिखित होने चाहिए:

- **सम्मान बनाए रखना:** मूर्ति की पवित्रता और सम्मान बनाए रखना चाहिए।
- **स्वच्छता बनाए रखना:** मूर्ति के आसपास के क्षेत्र को साफ-सुथरा रखना चाहिए।
- **सुरक्षा करना:** मूर्ति को तोड़-फोड़ या किसी भी तरह के नुकसान से बचाना चाहिए।
- **प्रेरणा लेना:** केवल मूर्ति को देखकर ही नहीं, बल्कि उसके पीछे के आदर्शों और मूल्यों से प्रेरणा लेकर उन्हें अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

9. सीमा पर तैनात फ़ौजी ही देश-प्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी न किसी रूप में देश-प्रेम प्रकट करते हैं; जैसे-सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना, पर्यावरण संरक्षण आदि। अपने जीवन-जगत से जुड़े ऐसे और कामों का उल्लेख कीजिए और उन पर अमल भी कीजिए।

उत्तर: यह बिल्कुल सही है कि देशभक्ति केवल सीमा पर लड़ने वाले सैनिकों तक ही सीमित नहीं है। हम सभी अपने रोजमर्रा के जीवन में देशभक्ति दिखा सकते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

- बिजली, पानी और प्राकृतिक संसाधनों की बचत करना।
- स्कूल या मोहल्ले की साफ-सफाई में योगदान देना।
- वृद्धों और जरूरतमंदों की मदद करना।
- नियमों का पालन करना, जैसे ट्रैफिक नियम।
- शिक्षा को बढ़ावा देना।

10. निम्नलिखित पंक्तियों में स्थानीय बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, आप इन पंक्तियों को मानक हिंदी में लिखिए-

www.onepointlearning.com

कोई गिराहक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उधर दुसरा बिठा दिया।

उत्तर:

मानक हिंदी: कृपया समझिए कि कोई ग्राहक आया है। उसे चौड़े फ़्रेम का चश्मा चाहिए। इसे कैप्टन कहाँ से लाएगा? इसलिए मूर्तिकार ने उसे दे दिया और दूसरी चीज़ वहाँ रख दी।"

11. 'भाई खूब! क्या आइडिया है!' इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से क्या लाभ होते हैं?

उत्तर: एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से कई लाभ होते हैं:

- **भावों की बेहतर अभिव्यक्ति:** कुछ शब्द किसी विशेष भाव या विचार को उस भाषा से बेहतर व्यक्त कर सकते हैं जिस भाषा में वे मूल रूप से बोले जाते हैं।
- **भाषा का विकास:** इससे भाषा समृद्ध होती है और उसकी शब्दावली का विस्तार होता है।
- **सहजता और प्रवाह:** बातचीत में यह सहजता और प्रवाह लाता है, क्योंकि लोग अक्सर उन शब्दों का उपयोग करते हैं जो उनके लिए सबसे सामान्य और सुविधाजनक होते हैं।
- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** यह विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं के बीच संपर्क और समझ को बढ़ावा देता है।

भाषा- अध्ययन

12. निम्नलिखित वाक्यों से निपात छाँटिए और उनसे नए वाक्य बनाइए-

(क) नगरपालिका थी तो कुछ न कुछ करती भी रहती थी।

- **निपात:** तो, भी
- **नए वाक्य:** तुमने बुलाया तो सही।

(ख) किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा।

- **निपात:** ही
- **नया वाक्य:** आज वह ही जीतेगा।

(ग) यानी चश्मा तो था लेकिन संगमरमर का नहीं था।

- **निपात:** तो
- **नया वाक्य:** उसने मुझसे कुछ कहा तो था।

(घ) हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाए।

- **निपात:** भी
- **नया वाक्य:** मैं भी वहाँ जाऊँगा।

(ङ) दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस क़स्बे से गुज़रते रहे।

www.onepointlearning.com

निपात: तक

नया वाक्य: मैं देर रात तक पढ़ता हूँ।

13. निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए-

(क) वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ़्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फ़िट कर देता है।

→ **कर्मवाच्य:** उसके द्वारा अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ़्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फ़िट कर दिया जाता है।

(ख) पानवाला नया पान खा रहा था।

→ **कर्मवाच्य:** पानवाले द्वारा नया पान खाया जा रहा था।

(ग) पानवाले ने साफ़ बता दिया था।

→ **कर्मवाच्य:** पानवाले द्वारा साफ़ बता दिया गया था।

(घ) ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे।

→ **कर्मवाच्य:** ड्राइवर द्वारा ज़ोर से ब्रेक मारे गए।

(ङ) नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।

→ **कर्मवाच्य:** नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।

(च) हालदार साहब ने चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया।

→ **कर्मवाच्य:** हालदार साहब द्वारा चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।

14. नीचे लिखे वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए-

जैसे-अब चलते हैं। - अब चला जाए।

(क) मैं बैठ नहीं सकती।

→ **भाववाच्य:** मुझसे बैठा नहीं जाता।

(ख) मैं देख नहीं सकती।

→ **भाववाच्य:** मुझसे देखा नहीं जाता।

(ग) चलो, अब सोते हैं।

→ **भाववाच्य:** चलो, अब सोया जाए।

(घ) माँ रो भी नहीं सकती।

→ **भाववाच्य:** माँ से रोया भी नहीं जाता।

www.onepointlearning.com